

पवित्रता के सागर, ऐवर-प्योर, पतित-पावन, विश्व में पवित्र दुनिया के रचयिता, परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने कहा, मीठे बच्चे - रक्षाबन्धन का पर्व पवित्रता की प्रतिज्ञा करने का पर्व हैं, जो संगमयुग से ही शुरू होता हैं, अभी तुम पवित्र बनने की प्रतिज्ञा करते हो.

परमात्मा शिव द्वारा स्थापित इस बेहद के ज्ञान-रुद्र-यज्ञ का मुख्य कारण, इस विश्व की सर्व जीवात्माओं और प्रकृति के पांच तत्वों को संपूर्ण पवित्र बनाकर इस विश्व पर संपूर्ण पावन दुनिया सतयुग की स्थापना करना हैं. इस लिए हमारे यह ब्राह्मण जीवन में पवित्रता धारण करना सबसे मुख्य हैं.

किसे संपूर्ण पवित्र आत्मा कहा जाता हैं?

जीवन में ब्रह्मचर्य को पालन करना ही संपूर्ण पवित्रता नहीं हैं.

संपूर्ण पवित्र आत्मा यानी --

- जिसकी वृत्ति संपूर्ण पावन हो. वृत्ति में रिंचक मात्र भी काम-विकार न हो.
- पावन वृत्ति से अपनी दृष्टि को शुद्ध किया हो.
- स्वप्न में भी अपवित्रता न हो.
- सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली सर्व आत्माओं प्रति भाई-भाई की वृत्ति-दृष्टि हो.
- व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो.
- स्व से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट हो.
- अपने मन-वचन-कर्म से किसी को दुख न देती हो.

संपूर्ण पवित्रता धारण करने की विधि -

- स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा शिवबाबा से ज्वालामुखी योग कर, अपवित्रता के संस्कारों को आत्मा में से जला कर भस्म करना हैं.
- ज्ञान को युज कर अपनी वृत्ति को पावन करना हैं. सर्व आत्माओं के तरफ हमारी वृत्ति अंदर से भाई-भाई की रखने की प्रैक्टिस करनी हैं.
- आत्मा में से भय को निकाल, स्व से और परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट रहना ही हैं.

- व्यर्थ से मुक्त रहने के लिए, फालतू बातों को न सुनना हैं, न बोलना हैं और न देखना हैं.
- नींद में स्वप्न से मुक्त रहने के लिए, बाबा से दस मिनिट योग कर, बाबा की गोदी में सो जाना हैं.
- मन-वचन-कर्म से किसी का दुख लेना नहीं हैं और किसको भी दुख देना नहीं हैं.

संपूर्ण पवित्रता कि स्वयं में चैकिंग ---

- पवित्रता को चेक करने के लिए हमारी वृत्ति को चेक करना हैं. अगर मेरी वृत्ति स्वच्छ हैं तो मेरी आंखें किसी पर ठहरेगी नहीं, आंखें धोखा नहीं देगी. चेक करें की मन-वचन-कर्म से संबन्ध-सम्पर्क में आनेवाली सर्व आत्माओं प्रति हमारी वृत्ति भाई-भाई की रहती हैं?
- बाबा ने कहा हैं की व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता हैं. तो हमें ये स्वयं में चेक करना हैं की कहा तक व्यर्थ संकल्पों पर हमारा काबू हैं?
- स्व से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट रहने वाली आत्मा ही संपूर्ण पवित्र बन सकती हैं. तो चेक करें हम कितना ऑनेस्ट बने हैं?
- इस समय प्रकृति के पांचों तत्व संपूर्ण तमोप्रधान हैं इसलिए जभी हम पानी पीते या खाना खाते, बाबा की याद में रह पवित्रता की दृष्टि देकर खाते हैं?
- स्वप्न में भी अपवित्रता न आये इसलिए सोने से पहले दस मिनिट बाबा को याद कर बाद में सोते हैं?
- चेक करो, हम किसी भी अन्य आत्मा को अपने मन-वचन-कर्म से दुख तो नहीं देती हूँ?

बाबा ने बताया हैं की पवित्रता ही सुख-शांति की जननी हैं. देवी-देवताये सब सुखी हैं इसका कारण वे संपूर्ण पवित्र हैं. याद रहे की पवित्रता मेरी पूंजी हैं, जैसे हमारे बचत खाते में रखी हुई पूंजी को हम संभाल कर रखते हैं, वैसे ही मुझे अपनी पवित्रता की संभाल करनी हैं.

प्रतिज्ञा --- कुछ भी हो जाये, चाहे अपने मन की स्थिति द्वारा, चाहे कोई अन्य आत्माओं द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे वायुमण्डल द्वारा कुछ भी हो जाये, मुझे पवित्रता की धारणा को पूरा पालन करना ही हैं.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com .